

# एलियाह - नंबर छह

## दस परीक्षण

Jeff Pippenger

2023-10-05

हम एलियाह के प्रतीकवाद पर चर्चा कर रहे हैं और अब कार्मेल पर्वत और सीनै पर्वत के इतिहास का उपयोग कर रहे हैं, ताकि प्रोटेस्टेंटवाद के सींग के लिए एक क्रमिक परीक्षण प्रक्रिया और गणतंत्रवाद के सींग के लिए एक क्रमिक राजनीतिक विकास को दर्शाया जा सके, जो प्रोटेस्टेंटवाद के सींग के समानांतर है।

पिछला लेख गिनती के अध्याय तेरह और चौदह में वर्णित विद्रोह पर विचार कर रहा था, जो लाल समुद्र पार करने के बाद प्राचीन इस्राएल के लिए दसवीं और अंतिम परीक्षा की पहचान करता है। यह इतिहास मिलेराइट इतिहास के आरंभिक आंदोलन के साथ मेल खाता है, और परमेश्वर के अंतिम आंदोलन के इतिहास के साथ भी मेल खाता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के तीनों स्वर्गदूतों का कार्य आरंभ में एक आंदोलन और अंत में एक आंदोलन द्वारा पूरा किया जाता है।

"तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की घोषणा में सहभागी होने वाला स्वर्गदूत अपनी महिमा से समूची पृथ्वी को आलोकित करने वाला है। यहाँ विश्व-व्यापी विस्तार और अभूतपूर्व शक्ति के एक कार्य की भविष्यवाणी की गई है। 1840-44 का आगमन आंदोलन परमेश्वर की शक्ति का एक महिमामय प्रगटीकरण था; प्रथम स्वर्गदूत का संदेश संसार के हर मिशनरी केंद्र तक पहुँचाया गया, और कुछ देशों में धार्मिक रुचि का वह सर्वोच्च स्तर देखा गया, जो सोलहवीं शताब्दी के सुधार के बाद से किसी भी देश में देखा गया था; परंतु तीसरे स्वर्गदूत की अंतिम चेतावनी के अधीन होने वाला शक्तिशाली आंदोलन इन सब से बढ़कर होगा।" महान संघर्ष, 611.

आरंभिक आंदोलन के इतिहास और अंतिम आंदोलन के इतिहास के बीच, हम लाओदिकिया की कलीसिया का इतिहास पाते हैं। वह स्वर्गदूत जो अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करता है, स्पष्ट रूप से एक आंदोलन के रूप में पहचाना जाता है, न कि एक कलीसिया के रूप में।

बाबुल के विषय में, इस भविष्यवाणी में जिस समय को दिखाया गया है, यह घोषित किया गया है: 'उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अधर्मों को स्मरण किया है।' प्रकाशितवाक्य 18:5. उसने अपने अपराध की सीमा पूरी कर दी है, और उस पर विनाश आने ही वाला है। परन्तु परमेश्वर के अब भी बाबुल में लोग हैं; और उसके न्याय के आगमन से पहले इन विश्वासयोग्य लोगों को बाहर बुलाया जाना चाहिए, ताकि वे उसके पापों में सहभागी न हों और 'उसकी विपत्तियों में से कुछ भी न पाएँ।' इसलिए वह आंदोलन प्रतीकित किया गया है जिसमें स्वर्ग से उतरता हुआ स्वर्गदूत अपनी महिमा से पृथ्वी को प्रकाशित करता है और प्रबल स्वर में पुकार कर बाबुल के पापों की घोषणा करता है। उसके संदेश के साथ यह पुकार सुनाई देती है: 'उसमें से बाहर निकल आओ, हे मेरे लोगो।' ये घोषणाएँ, तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ मिलकर, पृथ्वी के निवासियों को दी जाने वाली अंतिम चेतावनी बनती हैं। महान संघर्ष, 604.

सभी भविष्यद्वक्ता एक-दूसरे से सहमत हैं और वे जिस समय में भविष्यवाणियाँ घोषित की गईं, उस काल की अपेक्षा 'अंतिम दिनों' को अधिक स्पष्ट रूप से चिन्हित करते हैं। इस प्रवृत्ति के एक उदाहरण के रूप में, प्रकाशितवाक्य 18 का स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य 10 के स्वर्गदूत द्वारा प्रतिरूपित रहा है और है। दोनों जब उतरते हैं तो अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करते हैं। सिस्टर व्हाइट पुस्तक Early Writings में पहले स्वर्गदूत की पहचान करती हैं।

"यीशु ने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को यह आज्ञा दी कि वह पृथ्वी पर उतरकर पृथ्वी के निवासियों को चेतावनी दे कि वे उसके दूसरे आगमन की तैयारी करें। जैसे ही स्वर्गदूत स्वर्ग में यीशु की उपस्थिति से निकला, एक अत्यंत तेजस्वी और महिमामय प्रकाश उसके आगे-आगे चला। मुझे बताया गया कि उसका मिशन अपनी महिमा से

पृथ्वी को आलोकित करना और मनुष्यों को परमेश्वर के आने वाले क्रोध की चेतावनी देना था।" प्रारंभिक लेखन, 245.

प्रकाशितवाक्य अठारह का वह स्वर्गदूत 11 सितंबर, 2001 को उतर आया। उसका प्रतिरूप उस स्वर्गदूत में था जो 11 अगस्त, 1840 को उतरा था। यशायाह अध्याय छह में, यशायाह को स्वर्ग का मंदिर और परमेश्वर की महिमा दिखाई जाती है। अध्याय छह की तीसरी आयत में बताया गया है कि सारी पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण है। यह तब होता है जब प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत उतरता है।

और इन बातों के बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास महान सामर्थ्य था; और पृथ्वी उसकी महिमा से आलोकित हो गई। प्रकाशितवाक्य 18:1.

यशायाह अध्याय 6 की तीसरी आयत उसी इतिहास की ओर संकेत करती है।

और एक ने दूसरे से पुकारकर कहा: पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का प्रभु; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है। यशायाह 6:3.

सिस्टर व्हाइट यशायाह के पवित्रस्थान-संबंधी दर्शन को प्रकाशितवाक्य अध्याय 18 के आंदोलन के साथ जोड़ती हैं।

सिंहासन के सामने खड़े सेराफ़िम परमेश्वर की महिमा का दर्शन करते हुए इतनी श्रद्धाभरी विस्मय-भावना से परिपूर्ण हैं कि वे एक क्षण के लिए भी अपने प्रति आत्म-तुष्टि से नहीं देखते, न स्वयं की या एक-दूसरे की प्रशंसा में। उनकी स्तुति और महिमा उस सेनाओं के प्रभु के लिए है, जो अति उच्च और उन्नत है, और जिसके वस्त्र का घेरा अपनी महिमा से मंदिर को भर देता है। जब वे भविष्य को देखते हैं, जब सम्पूर्ण पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाएगी, तब विजयी स्तुति-गीत मधुर गान में एक से दूसरे तक गूँज उठता है, 'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का प्रभु।' वे परमेश्वर की महिमा करने में पूर्णतः संतुष्ट हैं; और उसकी उपस्थिति में, उसकी प्रसन्न स्वीकृति की मुस्कान के नीचे, उन्हें और कुछ नहीं चाहिए। उसकी छवि धारण करने में, उसकी सेवा करने और उसकी आराधना करने में, उनकी सर्वोच्च अभिलाषा पूर्णतः सिद्ध हो जाती है।

"यशायाह को दिया गया दर्शन अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा की अवस्था को दर्शाता है।" Review and Herald, 22 दिसंबर, 1896.

यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय में और अठारहवें अध्याय में, तथा यशायाह ने छठे अध्याय में, और बहन व्हाइट की टिप्पणी सहित, पृथ्वी के परमेश्वर की महिमा से प्रकाशित होने के इन सभी चित्रणों को इतिहास के एक ही बिंदु पर रखा है। 11 सितंबर, 2001 को जो घटनाएँ घटित हुईं, उन्हें समूचे संसार ने देखा। 1863 में समाप्त हुए मिलराइट आंदोलन का क्रमिक इतिहास, उस इतिहास का अग्ररूप ठहरा जब प्रकाशितवाक्य 18 का शक्तिशाली स्वर्गदूत उतरता है और वह प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय में उतरे स्वर्गदूत से संबंधित इतिहास के साथ संयुक्त होता है। इन प्रारंभिक आधारों को स्थापित करने के बाद, हम गिनती के चौदहवें अध्याय में प्रस्तुत परीक्षा-प्रक्रिया पर लौटेंगे। जब मूसा ने उन विद्रोहियों के लिए मध्यस्थता की जो मिस्र लौटना और यहोशू और कालेब को पत्थरों से मार डालना चाहते थे, तब परमेश्वर ने मूसा की मध्यस्थता स्वीकार की।

और यहोवा ने कहा, मैं ने तेरे वचन के अनुसार क्षमा कर दिया है; परन्तु जैसा मैं जीवित हूँ, समस्त पृथ्वी यहोवा की महिमा से भर जाएगी। क्योंकि जितने मनुष्यों ने मेरी महिमा और वे चमत्कार जो मैं ने मिस्र देश और जंगल में किए, देखे हैं, और अब तक दस बार मुझे परखा है, और मेरी वाणी की नहीं सुनी; निश्चय वे उस देश को न देखेंगे जिसे मैं ने उनके पितरों को देने की शपथ खाई थी; जिन-जिन ने मुझे उकसाया है उनमें से कोई उसे न देखेगा। परन्तु मेरा सेवक कालेब, क्योंकि उसमें दूसरा आत्मा है और उसने पूरे मन से मेरा अनुसरण किया है, उसे मैं उस देश में ले जाऊँगा जहाँ वह गया था; और उसकी सन्तान उसे अधिकार में लेगी। गिनती 14:20-24.

गिनती अध्याय चौदह में प्रस्तुत इतिहास प्राचीन इस्राएल के लिए अंतिम परीक्षा है, और उनकी असफलता ने आने वाले चालीस वर्षों तक जंगल में उनकी मृत्यु को सुनिश्चित कर दिया। यह इतिहास सीधे प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह से जुड़ा है, क्योंकि वहाँ परमेश्वर ने यह घोषणा की कि 'जैसा कि सचमुच परमेश्वर जीवित हैं, समस्त पृथ्वी प्रभु की महिमा से भर जाएगी।' यह एक अत्यंत प्रबल कथन है जिसे परमेश्वर ने इस ऐतिहासिक विवरण में रखा है, और ऐसा करते हुए वह इस बात पर बल देता है कि गिनती अध्याय तेरह और चौदह में दर्शाया गया इतिहास प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत के शक्तिशाली आंदोलन की ओर अग्रिम संकेत करता था। चूँकि प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह परमेश्वर के शेष जनों के अंतिम चरण से संबंधित है, इसलिए परमेश्वर के शेष जनों की शुरुआत भी गिनती की उस खंड में चित्रित है, जिस पर हम विचार कर रहे हैं।

11 अगस्त, 1840 को, जब दूसरी विपत्ति से संबंधित इस्लाम की एक भविष्यवाणी पूरी हुई, तब पूर्व चुने हुए वाचा के लोगों की परीक्षा उस एलियाह के संदेश द्वारा हुई जो अभी-अभी सही सिद्ध हुआ था।

11 सितंबर, 2001 को, जब इस्लाम की तीसरी विपत्ति की एक भविष्यवाणी पूरी हुई, पूर्व चुनी हुई वाचा की प्रजा ने एलियाह के उस संदेश के रूप में, जो अभी-अभी सही सिद्ध हुआ था, जीवितों के न्याय की शुरुआत को चिह्नित किया।

मिलेराइट इतिहास का एलियाह संदेश भविष्यसूचक काल के संदर्भ में स्थापित था। 11 सितंबर, 2001 का एलियाह संदेश इतिहास की पुनरावृत्ति के संदर्भ में स्थापित था। 11 सितंबर, 2001 ने 11 अगस्त, 1840 के इतिहास को दोहराया, क्योंकि दोनों तिथियाँ इस्लाम की एक भविष्यवाणी की पूर्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं, और दोनों उस स्वर्गदूत के उतरने को चिह्नित करती हैं, जिसके बारे में सिस्टर वाइट ने कहा कि वह 'यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व नहीं' है। यद्यपि सिस्टर वाइट ने प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत के बारे में कभी यह नहीं कहा कि वह 'यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व नहीं' था, जैसा कि वह प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के स्वर्गदूत के बारे में कहती हैं, फिर भी प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह का स्वर्गदूत 'उसकी' महिमा से पृथ्वी को प्रकाशमान करता है, और शास्त्र स्पष्ट है कि पृथ्वी को प्रकाशमान करने वाली महिमा यीशु मसीह की ही है।

आरंभ में प्रोटेस्टेंटों की परीक्षा लाने वाला न्याय का साधन, जिसका प्रतिनिधित्व एलियाह करते हैं, मिलेराइट आंदोलन था। अंत में सेवेथ-डे एडवेंटिज़्म की परीक्षा लाने वाला न्याय का साधन, जिसका प्रतिनिधित्व एक लाख चवालीस हजार करते हैं, एलियाह आंदोलन है। एलियाह का प्रतीक एक से अधिक अर्थ रखता है, और यद्यपि वह मिलर और मिलेराइट आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है, वह एक लाख चवालीस हजार का भी प्रतिनिधित्व करता है।

रूपांतरण के पर्वत पर मूसा पाप और मृत्यु पर मसीह की विजय के साक्षी थे। वे उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे जो धर्मियों के पुनरुत्थान के समय कब्र से निकलेंगे। एलियाह, जो बिना मृत्यु देखे स्वर्ग में उठा लिए गए थे, उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे जो मसीह के दूसरे आगमन के समय पृथ्वी पर जीवित होंगे, और जो 'एक क्षण में, आँख झपकते ही, अंतिम तुरही पर, बदल दिए जाएंगे;' जब 'यह नश्वर अवश्य अमरता धारण करेगा,' और 'यह विनाशी अवश्य अविनाशिता धारण करेगा।' 1 कुरिन्थियों 15:51-53। यीशु स्वर्ग के प्रकाश से आच्छादित थे, जैसे वह प्रकट होंगे जब वह 'दूसरी बार, पाप के बिना, उद्धार के लिए' आएंगे। क्योंकि वह 'अपने पिता की महिमा में, पवित्र स्वर्गदूतों के साथ' आएंगे। इब्रानियों 9:28; मरकुस 8:38। उद्धारकर्ता का शिष्यों से किया हुआ वचन अब पूरा हुआ। पर्वत पर भविष्य की महिमा के राज्य का लघु रूप में प्रतिनिधित्व किया गया—मसीह राजा के रूप में, मूसा पुनर्जीवित संतों के प्रतिनिधि के रूप में, और एलियाह उठा लिए गए लोगों के प्रतिनिधि के रूप में। *The Desire of Ages*, 412.

वाचा के लोग, जिन्हें चयन में छोड़ दिया जाता है, दस बनाम दो के बहुमत में होते हैं। बहुतों को बुलाया जाता है, परंतु थोड़े ही चुने जाते हैं। दसवें परीक्षण की विफलता इस पर आधारित थी कि प्रतिज्ञात भूमि के बारे में बुरी रिपोर्ट को स्वीकार किया गया या अस्वीकार, और अच्छी रिपोर्ट को अस्वीकार किया गया या स्वीकार। अतः, यहां चित्रित इतिहास यह दर्शाता है कि क्रमिक परीक्षाओं के इतिहास में विजय या पराजय का आधार उसी जानकारी की व्याख्या

करने वाली दो पद्धतियों में से किसी एक के चयन पर टिका है।

बारहों जासूसों ने प्रतिज्ञात देश देखा, परंतु प्रतिज्ञात देश क्या दर्शाता है, इस विषय में दो भिन्न निष्कर्ष निकाले गए। एक प्रतिवेदन मनुष्य के भय से प्रेरित था, दूसरा विश्वास से। एक में परमेश्वर के मार्गदर्शन को अस्वीकार कर मिस्री दासता में लौटने की इच्छा प्रकट हुई, और दूसरे में परमेश्वर के मार्गदर्शन पर भरोसा कर प्रतिज्ञात देश की ओर आगे बढ़ने की इच्छा प्रकट हुई।

मिलेराइट आंदोलन में, अधिकांश ने भी बाबेल की गुलामी में लौट जाने और उसकी बेटियाँ बन जाने को चुना, और यह पहले स्वर्गदूत के भविष्यद्वाणी संदेश को अस्वीकार करने के उनके निर्णय का प्रगटीकरण था। विश्वासयोग्य मिलेराइटों ने 1844 के वसंत में पहली निराशा के समय प्रतीत होने वाली विफलता के बाद भी, पहले स्वर्गदूत के भविष्यद्वाणी संदेश का अनुसरण करना चुना। गिनती की पुस्तक बारह जासूसों की दो भिन्न "रिपोर्टें" प्रस्तुत करती है, जो उसी भविष्यद्वाणी संदेश के दो अलग-अलग विश्लेषणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। 1863 में, लाओदीकियन ऐडवेंटिज़्म ने कोई भविष्यद्वाणी संदेश स्वीकार नहीं किया; उसने पहले से स्थापित एक भविष्यद्वाणी संदेश को अस्वीकार कर दिया। 1863 में, लाओदीकियन ऐडवेंटिज़्म उस बाइबिलीय पद्धति पर लौट गया और उसे स्वीकार कर लिया, जो विलियम मिलर की पूरी सेवकाई के दौरान उनका विरोध करती रही। जिन्होंने भविष्यद्वाणी संदेश को अस्वीकार किया और गुलामी में लौटने की इच्छा की, उनका प्रतीक गिनती अध्याय चौदह के विद्रोही थे, जो अंततः जंगल में मर गए।

संख्या "दस" को जब प्रतीक के रूप में माना जाता है, तो—जैसे सभी प्रतीकों के साथ होता है—उसके एक से अधिक अर्थ होते हैं। उसका प्रतीकात्मक अर्थ उस अंश के संदर्भ से समझा जाना चाहिए जहाँ वह पाया जाता है। "दस" एक प्रतीक के रूप में उत्पीड़न का प्रतिनिधित्व कर सकता है। यह एक परीक्षा का प्रतिनिधित्व कर सकता है। यह यूरोप के राजाओं, इस्राएल की उत्तरी जनजातियों और संयुक्त राष्ट्र के दस गुना संघ का प्रतिनिधित्व कर सकता है। स्मिर्ना की कलीसिया में परमेश्वर के लोगों को दस दिनों तक क्लेश झेलना था।

जो बातें तुम सहने वाले हो उनसे मत डरो; देखो, शैतान तुम में से कुछ को कैदखाने में डालने वाला है, ताकि तुम्हारी परीक्षा हो; और तुम दस दिनों तक क्लेश भोगोगे। मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहो, और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट दूँगा। प्रकाशितवाक्य 2:10.

इतिहासकार स्मिर्ना के इतिहास में डायोक्लेटियन द्वारा किए गए उत्पीड़न की ओर संकेत करते हैं, क्योंकि वह स्मिर्ना के इतिहास का सबसे कठोर उत्पीड़न था, और वह दस वर्षों तक चला। अन्य इतिहासकार स्मिर्ना के इतिहास में दस भिन्न उत्पीड़नों की पहचान करते हैं। किसी भी स्थिति में, वे रोमन साम्राज्य द्वारा ही किए गए थे, जिसे दानिय्येल अध्याय सात में दस सींगों द्वारा दर्शाया गया है। वे दस राजा वही राजा थे, जिनका प्रतिरूप वह अहाब है जिसने पापाई सत्ता के साथ व्यभिचार किया, और वे वही उत्पीड़न के साधन थे जिनका उपयोग पापाई सत्ता ने अंधकार युग के दौरान नरसंहार को अंजाम देने के लिए किया। "दस" उस राज्य शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो ईज़ेबेल के लिए उत्पीड़न को अंजाम देती है। दानिय्येल अध्याय एक में "दस" परीक्षा की अवधि का प्रतीक है।

तेरे दासों की परीक्षा ले, मैं तुझसे विनती करता हूँ, दस दिन; और हमें खाने को दालें और पीने को पानी दिया जाए। तब हमारे चेहरे तेरे सामने देखे जाएँ, और उन युवकों के चेहरों से तुलना की जाए जो राजा के भोजन का भाग खाते हैं; और जैसा तू देखे, वैसा ही अपने दासों से व्यवहार कर। सो उसने इस बात में उनकी बात मान ली, और दस दिन उनकी परीक्षा ली। और दस दिनों के अंत में उनके चेहरे उन सब युवकों से अधिक सुन्दर और शरीर से अधिक हृष्ट-पुष्ट दिखाई दिए जो राजा के भोजन का भाग खाते थे। दानिय्येल 1:12-15.

गिनती 14 में प्राचीन इस्राएल ने परमेश्वर को दस बार उकसाया था, जो एक समयावधि के दौरान हुई दस परीक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता था।

परन्तु मेरे जीवन की शपथ, सारी पृथ्वी प्रभु की महिमा से भर जाएगी। क्योंकि वे सब पुरुष जिन्होंने मेरी महिमा और वे चमत्कार जो मैंने मिस्र और जंगल में किए, देखे हैं, और जिन्होंने अब तक दस बार मुझे परखा है, और मेरी वाणी नहीं सुनी है। गिनती 14:21, 22.

यदि आप इंटरनेट पर यह समझने के लिए खोज करें कि लाल समुद्र पर हुए उद्धार से लेकर दसवीं परीक्षा तक उल्लिखित नौ विद्रोहों या असफल परीक्षाओं से अभिप्रेत विशिष्ट विद्रोह कौन-कौन से हैं, तो आपको इस पर कुछ भिन्न मत मिलेंगे कि प्राचीन इस्राएल की किन विफलताओं को उन दस परीक्षाओं में शामिल माना जाना चाहिए। मेरा मत है कि लाल समुद्र पर हुआ वह उद्धार, जिसे 22 अक्टूबर, 1844 के साथ विशेष रूप से जोड़ा गया है, ही दस परीक्षाओं की शुरुआत है; अतः 1844 से 1863 के बीच उत्पन्न हुई परीक्षाओं की गिनती भी वहीं से आरंभ की जानी चाहिए। 1798 में, जब दानियेल की पुस्तक की मुहर खोली गई, तब एक क्रमिक परीक्षण-प्रक्रिया आरंभ हुई थी, और वह प्रक्रिया पहले और दूसरे स्वर्गदूत के संदेशों के इतिहास को समेटती हुई 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर समाप्त हुई।

मिनियापोलिस में परमेश्वर ने अपने लोगों को सत्य के अनमोल रत्न नए रूप में दिए। स्वर्ग से आई इस ज्योति को कुछ लोगों ने उसी हठधर्मिता के साथ ठुकरा दिया, जैसी यहूदियों ने मसीह को अस्वीकार करते समय दिखाई थी, और 'पुराने सीमाचिह्न' पर डटे रहने की बहुत बातें हुईं। परंतु प्रमाण यह दर्शाते थे कि उन्हें पता ही नहीं था कि पुराने सीमाचिह्न वास्तव में क्या थे। प्रमाण भी थे और शास्त्र से ऐसे तर्क भी थे जो अंतरात्मा को स्वयं स्वीकार्य थे; परंतु लोगों के मन जमे हुए थे, प्रकाश के प्रवेश के विरुद्ध मानो मुहर लगी हुई थी, क्योंकि उन्होंने यह ठान लिया था कि 'पुराने सीमाचिह्न' हटाना एक खतरनाक भूल है, जबकि पुराने सीमाचिह्नों की एक खूँटी भी नहीं हिलाई जा रही थी; असल में, पुराने सीमाचिह्न क्या माने जाते हैं, इसके बारे में उनकी धारणाएँ ही विकृत थीं।

1844 में समय का बीतना महान घटनाओं का एक काल था, जिसने हमारे विस्मित नेत्रों के सामने स्वर्ग में घटित हो रही पवित्रस्थान की शुद्धि को प्रकट किया, और जिसका पृथ्वी पर परमेश्वर की प्रजा से निर्णायक संबंध था, [साथ ही] पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेश, और तीसरा, उस ध्वज को फहराता हुआ जिस पर यह लिखा था, 'परमेश्वर की आज्ञाएँ और यीशु का विश्वास।' इस संदेश के अंतर्गत सीमाचिह्नों में से एक था परमेश्वर का मन्दिर, जिसे स्वर्ग में उसकी सत्य-प्रेमी प्रजा ने देखा, और वह सन्दूक जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था थी। चौथी आज्ञा के सब्त का प्रकाश परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघनकर्ताओं के पथ पर अपनी प्रबल किरणों चमका उठा। दुष्टों का अमर न होना एक पुराना सीमाचिह्न है। पुराने सीमाचिह्नों की श्रेणी में आने वाली इसके अतिरिक्त मुझे और कोई बात स्मरण नहीं आती। पुराने सीमाचिह्नों को बदलने के बारे में यह सारा हल्ला पूरी तरह काल्पनिक है। The 1888 Materials, 518.

22 अक्टूबर, 1844 को तीसरा स्वर्गदूत अपने हाथ में एक संदेश लेकर आया।

जब पवित्र स्थान में यीशु की सेवकाई समाप्त हुई और वह अति पवित्र स्थान में प्रवेश कर गया, और उस सन्दूक के सामने खड़ा हुआ जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था थी, तब उसने संसार के लिए तीसरे संदेश के साथ एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत भेजा। स्वर्गदूत के हाथ में एक चर्मपत्र दिया गया, और जब वह शक्ति और महिमा के साथ पृथ्वी पर उतरा, तो उसने मनुष्य तक अब तक पहुँचाई गई सबसे भयानक धमकी के साथ एक भयावह चेतावनी की। Early Writings, 254.

22 अक्टूबर, 1844 को एक स्वर्गदूत अपने हाथ में एक चर्मपत्र लेकर उतरा, जिसे परमेश्वर के लोगों को खाना था। तब जिन "सीमाचिह्न" सिद्धांतों की पहचान कराई गई, उन्हें या तो खाकर स्वीकार करना है या अस्वीकार कर न खाना है। जब तीसरा स्वर्गदूत अपने हाथ में चर्मपत्र लेकर आया, तो उस चर्मपत्र में निहित संदेश छह परीक्षा-सम्बंधी सत्यों का प्रतिनिधित्व करता था। वे छह परीक्षाएँ इस प्रकार पहचानी गईं: "समय का बीतना", जो तेईस सौ वर्ष की भविष्यवाणी का प्रतिनिधित्व करता है; न्याय, जिसे "पवित्रस्थान की शुद्धि" के रूप में दर्शाया गया; तीन स्वर्गदूतों के संदेश; "परमेश्वर की व्यवस्था"; "सब्त"; तथा मृतकों की दशा, जिसे "आत्मा की अमरता का अभाव" के रूप में प्रस्तुत किया गया।

वे छह सत्य निस्संदेह परस्पर संबंधित हैं, लेकिन उन्हें व्यक्तिगत रूप से मील के पत्थर के रूप में पहचाना गया था। कुछ लोग इस सूची में समय के बीतने को शामिल करना नहीं चाहेंगे, परंतु स्पष्ट है कि बहुतों ने इस सत्य को अस्वीकार कर दिया कि 22 अक्टूबर, 1844 भविष्यवाणी की वास्तविक पूर्ति थी। वे उस परीक्षा में असफल रहे, जिससे वे आगे आने वाली परीक्षाओं से जूझ ही नहीं सके। परमेश्वर की परख की प्रक्रिया बार-बार एक प्रगतिशील प्रक्रिया के रूप में स्थापित की गई है, जो मांग करती है कि आप अगली परीक्षा में सम्मिलित होने से पहले पहली ही गई परीक्षा पर विजय प्राप्त करें।

जब हमने सब्त के प्रश्न पर प्रकाश प्रस्तुत करना आरम्भ किया, तब हमें प्रकाशितवाक्य 14:9-12 के तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की कोई स्पष्ट और परिभाषित समझ नहीं थी। जब हम लोगों के सामने आए तो हमारी गवाही का मुख्य विषय यह था कि महान दूसरा आगमन आंदोलन परमेश्वर की ओर से था, कि पहला और दूसरा संदेश निकल चुके थे, और कि तीसरा दिया जाना था। हमने देखा कि तीसरा संदेश इन वचनों पर समाप्त होता है: 'यहाँ पवित्र लोगों का धैर्य है; यहाँ वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं, और यीशु के विश्वास को धारण करते हैं।' और हम उतनी ही स्पष्टता से, जितनी अब देखते हैं, समझते थे कि ये भविष्यसूचक वचन एक सब्त-सुधार का संकेत देते थे; परंतु संदेश में उल्लिखित पशु की उपासना क्या थी, या पशु की प्रतिमा और चिह्न क्या थे, इस विषय में हमारा कोई निर्धारित मत नहीं था।

परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवकों पर प्रकाश चमकने दिया, और वह विषय धीरे-धीरे उनके मन में खुलता गया। उसे कड़ी दर कड़ी खोज निकालने के लिए बहुत अध्ययन और बड़ी चिंता व सावधानी की आवश्यकता हुई। सावधानी, चिंता और निरंतर परिश्रम के द्वारा यह कार्य आगे बढ़ता रहा, यहाँ तक कि हमारे संदेश की महान सच्चाइयाँ, एक स्पष्ट, सुसंबद्ध, पूर्ण समग्र रूप में, संसार को दे दी गई हैं।

"मैं एल्डर बेट्स से अपनी जान-पहचान का पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ। मैंने उन्हें एक सच्चे ईसाई सज्जन पाया—विनम्र और दयालु। उन्होंने मेरे साथ उतनी ही कोमलता से व्यवहार किया मानो मैं उनका अपना बच्चा हूँ। जब उन्होंने पहली बार मुझे बोलते सुना, तो उन्होंने गहरी रुचि प्रकट की। मेरे बोलना समाप्त करने के बाद, वे खड़े हुए और कहा: 'मैं एक संदेही थोमस हूँ। मुझे दर्शनों पर विश्वास नहीं है। लेकिन यदि मैं यह विश्वास कर पाता कि बहन ने आज रात जो गवाही सुनाई है, वह वास्तव में हमारे लिए परमेश्वर की वाणी थी, तो मैं जीवित लोगों में सबसे प्रसन्न व्यक्ति होता। मेरा हृदय गहराई से प्रभावित हुआ है। मैं वक्ता को ईमानदार मानता हूँ, परन्तु यह नहीं समझा सकता कि उसे वे अद्भुत बातें कैसे दिखाई गईं जिनका उसने हमसे वर्णन किया है।'"

"मेरे विवाह के कुछ महीनों बाद, मैं अपने पति के साथ मेन के टॉपशम में एक सम्मेलन में शामिल हुई, जिसमें एल्डर बेट्स उपस्थित थे। तब वे यह पूरी तरह विश्वास नहीं करते थे कि मेरे दर्शन परमेश्वर की ओर से हैं। वह बैठक अत्यंत रुचिकर रही। परमेश्वर का आत्मा मुझ पर ठहरा; मैं परमेश्वर की महिमा के दर्शन में लीन हो गई, और पहली बार मैंने अन्य ग्रहों को देखा। दर्शन से बाहर आने के बाद मैंने जो देखा था, उसे बताया। तब एल्डर बी. ने पूछा कि क्या मैंने खगोलशास्त्र का अध्ययन किया है। मैंने उनसे कहा कि मुझे याद नहीं कि मैंने कभी खगोलशास्त्र पर नज़र भी डाली हो। वे बोले: 'यह प्रभु की ओर से है।' मैंने उन्हें इससे पहले कभी इतना मुक्त और प्रसन्न नहीं देखा था। उनका मुख स्वर्गीय प्रकाश से दमक रहा था, और उन्होंने कलीसिया को सामर्थ्य के साथ उपदेश दिया।" गवाहियाँ, खंड 1, 78-80.

निश्चित रूप से, ये सभी सिद्धान्तगत परीक्षाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं; परन्तु ये ऐसी परीक्षाएँ भी हैं जिन्हें अलग-अलग करके परखा जा सकता है, और ये क्रमशः परमेश्वर के दासों पर प्रकट की गईं। बहुत-सी कलीसियाएँ सातवें दिन का सब्त मानती हैं, परन्तु तीन स्वर्गदूतों के संदेश को अस्वीकार करती हैं। वे इस सत्य को अस्वीकार करती हैं कि 22 अक्टूबर, 1844 को न्याय आरम्भ हुआ था, फिर भी वे सब्त का पालन करती हैं। ये सिद्धान्तगत परीक्षाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं, परन्तु ये छह विशिष्ट परीक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जैसा कि अभी जोसेफ बेट्स द्वारा दर्शाया गया, खगोल-विज्ञान से पूरी तरह परिचित उस समुद्री कप्तान ने उस भविष्यवाणी की आत्मा को स्वीकार कर लिया जिसे उसने पहले अस्वीकार किया था। दिसंबर 1844 में, एलेन व्हाइट

को अपना पहला दर्शन प्राप्त हुआ और आंदोलन में सातवीं कसौटी आ गई।

बाइबल आपका परामर्शदाता होना चाहिए। बाइबल तथा परमेश्वर द्वारा दी गई गवाहियों का अध्ययन करो; क्योंकि वे कभी उसके वचन का खंडन नहीं करतीं। यदि गवाहियाँ परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं हैं, तो उन्हें अस्वीकार करो। मसीह और बेलियाल का मेल संभव नहीं है। चयनित संदेश, पुस्तक 3, 33.

महान निराशा के थोड़े ही समय बाद बहन व्हाइट ने एक लेख का अनुमोदन किया जिसमें बताया गया था कि 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह पवित्र स्थान से परमपवित्र स्थान में स्थानांतरित हुए। उन्होंने इस प्रकाशन को "प्रत्येक संत" के लिए अनुशंसित किया।

"मेरा विश्वास है कि 2300 दिनों के अंत में जिसे शुद्ध किया जाना है वह पवित्रस्थान नए यरूशलेम का मंदिर है, जिसके मसीह याजक हैं। प्रभु ने मुझे एक दर्शन में, एक वर्ष से भी अधिक समय पहले, दिखाया कि भाई क्रोजियर के पास पवित्रस्थान की शुद्धि आदि के विषय में सच्चा प्रकाश था; और यह उसकी इच्छा थी कि भाई क. वह दृष्टिकोण लिखकर प्रस्तुत करें, जो उन्होंने हमें डे-स्टार, एक्स्ट्रा, 7 फ़रवरी, 1846 में दिया। मुझे प्रभु की ओर से इस बात का पूरा अधिकार है कि उस एक्स्ट्रा की हर संत को सिफारिश करूँ।" छोटे झुंड के नाम एक शब्द, 12.

उनका अनुमोदन क्रोजियर द्वारा मसीह के अति पवित्र स्थान की ओर गमन के वर्णन का था, परंतु उस लेख में कई त्रुटिपूर्ण शिक्षाएँ थीं, जिनमें धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद की यह शिक्षा भी शामिल थी कि दानिय्येल की पुस्तक में 'daily' मसीह की सेवकाई का प्रतिनिधित्व करता था। इसलिए उन्होंने एक स्पष्टीकरण लिखा, जिसका प्रथम प्रकाशन 1850 में हुआ और बाद में उसे पुस्तक "Early Writings" में सम्मिलित किया गया। वहाँ उन्होंने यह बताया कि "जिन्होंने न्याय-घड़ी की पुकार दी, उनके पास 'daily' के विषय में सही दृष्टिकोण था।"

तब मैंने 'दैनिक' (दानिय्येल 8:12) के संबंध में देखा कि 'बलिदान' शब्द मनुष्य की बुद्धि से जोड़ा गया है और वह मूल पाठ का हिस्सा नहीं है; और यह भी कि प्रभु ने उसका सही दृष्टिकोण उन लोगों को दिया जिन्होंने न्याय की घड़ी का आह्वान दिया। जब एकता विद्यमान थी, 1844 से पहले, लगभग सब 'दैनिक' के सही दृष्टिकोण पर एकमत थे; पर 1844 के बाद की उलझन में अन्य मत अपनाए गए, और उसके परिणामस्वरूप अंधकार और भ्रम आए। Early Writings, 74.

दानिय्येल की पुस्तक में 'the daily' का विषय बीसवीं सदी के आरंभिक भाग में एडवेंटिज़्म के पतनशील प्रोटेस्टेंटवाद की कार्यप्रणाली की ओर लौटने का एक प्रतीक बन गया, और आज 'the daily' के संबंध में मिलेराइट्स की सही समझ को एडवेंटिज़्म के धर्मशास्त्रियों ने अस्वीकार कर दिया है। यह अस्वीकार कर दिया गया है, जबकि सिस्टर वाइट ने स्पष्ट रूप से यह बताया था कि मिलेराइट्स ने 'the daily' को पैगनवाद की शैतानी शक्ति के रूप में सही ढंग से पहचाना था। उन्होंने 'the daily' के सत्य को न केवल उनके इस प्रेरित समर्थन के प्रतिकूल होकर अस्वीकार किया कि मिलेराइट्स की समझ सही थी, बल्कि इसके भी सीधे विरोध में जाकर कि उन्होंने स्पष्ट रूप से यह पहचाना था कि उस झूठी शिक्षा, जो यह सिखाती है कि 'the daily' मसीह की पवित्रस्थान सेवा का प्रतिनिधित्व करता है, 'स्वर्ग से निकाले गए स्वर्गदूतों' द्वारा दी गई थी!

"और वहाँ भाई डैनियल्स थे, जिनके मन पर शत्रु काम कर रहा था; और आपका मन तथा एल्डर प्रेस्कॉट का मन उन स्वर्गदूतों द्वारा प्रभावित किया जा रहा था जिन्हें स्वर्ग से निष्कासित किया गया था।" Manuscript Releases, खंड 20, 17.

आज एडवेंटिज़्म जिस चीज़ का उपयोग अपनी "कथाओं के व्यंजन" में से एक के रूप में करता है, उसके प्रति उसकी प्रबल अस्वीकृति इतनी तीव्र थी, क्योंकि डैनियल्स और प्रेस्कॉट ने शैतानी शक्ति (पैगनवाद) के एक प्रतीक को लिया और उस प्रतीक को मसीह की (उनकी पवित्रस्थान सेवा) से जोड़ दिया। इससे सिद्धान्तगत परीक्षाओं की संख्या आठ हो जाती है।

1863 तक की घटनाओं के इतिहास में नौवाँ परीक्षण 1850 में हबक्कूक की दूसरी तालिका का तैयार होना है। 1843 का अग्रणी चार्ट 1842 में तैयार किया गया था, और उसे 1843 का चार्ट केवल इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसने 1843 में मसीह की वापसी की भविष्यवाणी की थी। हबक्कूक की दूसरी तालिका तैयार करने का आदेश बहन व्हाइट को 1850 में दिया गया था। हबक्कूक की दो तालिकाओं का निर्माण पहले और दूसरे स्वर्गदूत के इतिहास को तीसरे के इतिहास से जोड़ता है। उनकी जीवन और कार्य की उनके पोते द्वारा लिखी जीवनी में, वह 1850 के चार्ट के निर्माण तक ले जाने वाली घटनाओं का एक अवलोकन प्रस्तुत करता है। वह ऐसा बहन व्हाइट की प्रासंगिक टिप्पणियाँ चुनकर करता है और उस अवलोकन में अपनी टिप्पणी भी जोड़ता है।

जब हम भाई निकोल्स के यहाँ लौटे, तो प्रभु ने मुझे एक दर्शन दिया और दिखाया कि सत्य को तालिकाओं पर स्पष्ट किया जाना चाहिए, और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के द्वारा, पहले के दो भी तालिकाओं पर स्पष्ट किए जाने के साथ, यह बहुतों को सत्य के पक्ष में निर्णय करने के लिए प्रेरित करेगा। - पत्र 28, 1850.

इस दर्शन में उसे यह भी दिखाया गया कि वह बात जो जेम्स व्हाइट को प्रकाशन जारी रखने का साहस देगी:

मैंने यह भी देखा कि जैसे दूतों का जाना आवश्यक था, वैसे ही पत्रिका का प्रकाशित होना भी आवश्यक था, क्योंकि दूतों को अपने साथ ऐसी पत्रिका चाहिए जिसमें वर्तमान सत्य हो, ताकि वे उसे सुनने वालों के हाथ में दे सकें, और तब वह सत्य मन से नहीं मिटे। और वह पत्रिका वहाँ तक पहुँच जाएगी जहाँ दूत नहीं पहुँच सकते।—वही।

नए चार्ट पर काम तुरंत शुरू कर दिया गया, और इसके बारे में भाइयों को बताने का अवसर अगले महीने जेम्स द्वारा निकाले गए 'Present Truth' के अंक में दिया गया:

चार्ट। Daniel और John के दर्शनों का एक कालानुक्रमिक चार्ट, जिसे वर्तमान सत्य को स्पष्ट रूप से समझाने हेतु तैयार किया गया है, अब Dorchester, Massachusetts के भाई Otis Nichols की देखरेख में लिथोग्राफ किया जा रहा है। जो लोग वर्तमान सत्य सिखाते हैं, उन्हें इससे बहुत सहायता मिलेगी। चार्ट के संबंध में आगे और सूचना बाद में दी जाएगी।-Present Truth, November, 1850.

जनवरी 1851 के उत्तरार्ध तक, चार्ट तैयार था और 2 डॉलर में विज्ञापित किया गया था। जेम्स व्हाइट इससे बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने इसे 'जिन्हें परमेश्वर ने तीसरे स्वर्गदूत का संदेश देने के लिए बुलाया है' को निःशुल्क देने की पेशकश की (Review and Herald, January, 1851)। कुछ उदार दानों ने प्रकाशन के खर्च को पूरा करने में मदद की थी। Arthur White, Ellen G. White: The Early Years, volume 1, 185.

1843 के चार्ट के बारे में बोलते हुए, बहन व्हाइट ने दर्ज किया कि वह परमेश्वर द्वारा निर्देशित किया गया था।

"प्रभु ने मुझे दिखाया कि 1843 का चार्ट उसके हाथ से निर्देशित था और उसका कोई भाग बदला नहीं जाना चाहिए; उसमें दी गई संख्याएँ वैसी ही थीं जैसी वह चाहता था। उसका हाथ उस पर था और उसने कुछ संख्याओं में हुई एक गलती को छिपा रखा, ताकि जब तक उसका हाथ हटाया नहीं गया, कोई उसे देख न सके।" रिव्यू एंड हेराल्ड, 1 नवंबर, 1850.

1850 में एक और चार्ट तैयार करने की आज्ञा से संबंधित प्रकाश को दर्ज करते समय, उसने 1850 के चार्ट को वही दिव्य अनुमोदन दिया जो 1843 के चार्ट के संबंध में दिया गया था, साथ ही यह भी बताया कि उस समय तैयार किए जा रहे अन्य चार्ट प्रभु को स्वीकार्य नहीं थे। नए चार्ट तैयार करने की आज्ञा को एक नए प्रकाशन को मुद्रित करने की आज्ञा के साथ जोड़ा गया था।

मैंने देखा कि चार्ट बनाने का काम पूरी तरह गलत था। यह भाई रोड्स से प्रारंभ हुआ और भाई केस ने इसे आगे बढ़ाया। चार्ट बनाने और स्वर्गदूतों तथा महिमामय यीशु का प्रतिनिधित्व करने के लिए अनगढ़, घृणित छवियाँ गढ़ने में साधन खर्च किए गए हैं। मैंने देखा कि ऐसी चीज़ें परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं। मैंने देखा कि भाई निकोल्स द्वारा चार्ट के प्रकाशन में परमेश्वर की इच्छा थी। मैंने देखा कि बाइबल में इस चार्ट के विषय में एक

भविष्यवाणी थी, और यदि यह चार्ट परमेश्वर के लोगों के लिए बनाया गया है, तो यदि यह एक के लिए पर्याप्त है, तो दूसरे के लिए भी पर्याप्त है; और यदि किसी एक को बड़े आकार में चित्रित किया हुआ नया चार्ट चाहिए, तो सबको उसकी उतनी ही आवश्यकता है।

मैंने देखा कि भाई केस के मन में एक ऐसी बेचैन, असहज, असंतुष्ट और अकृतज्ञ भावना थी, जिसके चलते वह एक और चार्ट चाहता था। मैंने देखा कि इन चित्रित चार्टों का मंडली पर बुरा प्रभाव पड़ता था। इससे सभा में उपहास का हल्का-फुल्का, खोखला माहौल बन जाता था।

मैंने देखा कि परमेश्वर के आदेश से बनाए गए चार्ट बिना किसी व्याख्या के भी मन पर अच्छा प्रभाव डालते थे। चार्टों पर स्वर्गदूतों के चित्रण में कुछ कोमल, मनोहर और स्वर्गीय सा है। मन लगभग अनजाने में ही परमेश्वर और स्वर्ग की ओर खिंच जाता है। परन्तु जो अन्य चार्ट तैयार किए गए हैं, वे मन में घृणा उत्पन्न करते हैं और मन को स्वर्ग की अपेक्षा पृथ्वी पर अधिक टिकाए रखते हैं। स्वर्गदूतों का प्रतिनिधित्व करने वाली छवियाँ स्वर्गीय प्राणियों से अधिक दानवों जैसी दिखती हैं। मैंने देखा कि उन चार्टों ने कई दिनों और हफ्तों तक भाई केस का मन घेर रखा था, जबकि उन्हें परमेश्वर से स्वर्गीय बुद्धि खोजनी चाहिए थी और आत्मा के अनुग्रहों तथा सत्य के ज्ञान में बढ़ना चाहिए था।

मैंने देखा कि यदि चार्ट छपवाने में जो साधन व्यर्थ किए गए थे, उन्हें भाइयों के सामने सत्य को स्पष्ट करने के लिए पुस्तिकाएँ आदि प्रकाशित करने में लगाया गया होता, तो बहुत भलाई होती और आत्माओं का उद्धार होता। मैंने देखा कि चार्ट बनाने का व्यवसाय बुखार की तरह फैल गया है। पांडुलिपि प्रकाशन, संख्या 13, 359; 1853.

वह स्पष्ट रूप से कहती है कि "परमेश्वर भाई निकोल्स द्वारा [1850] चार्ट के प्रकाशन में थे," और यह कि बाइबिल में इस चार्ट के बारे में "[हबक्कूक दो] की एक भविष्यवाणी" थी। उसने यह भी बताया कि "चार्ट" [बहुवचन; 1843 और 1850] जो "परमेश्वर द्वारा आदेशित थे, उन्होंने बिना किसी व्याख्या के भी मन पर अनुकूल प्रभाव डाला।" हबक्कूक दो ने मिलराइट्स को आदेश दिया कि वे दर्शन को तालिकाओं पर, (बहुवचन में), स्पष्ट करें, ताकि जो कोई उन दो चार्टों को पढ़े वह परमेश्वर के वचन में इधर-उधर दौड़ सके। दैवीय चार्टों को किसी अतिरिक्त व्याख्या की आवश्यकता नहीं थी, जैसा कि उरियाह स्मिथ के 1863 के नकली चार्ट के मामले में था।

और प्रभु ने मुझे उत्तर दिया और कहा, "दर्शन लिख, और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट लिख, ताकि जो उसे पढ़े वह दौड़ सके।" हबक्कूक 2:2.

इस लेख का केंद्रबिंदु दसवीं परीक्षा है। गिनती के अध्याय चौदह में मूसा द्वारा उल्लिखित दस परीक्षाओं के संदर्भ में, हिब्रू विद्वान और अन्य धर्मशास्त्री इस बात पर भिन्न-भिन्न अनुमान प्रस्तुत करते हैं कि लाल समुद्र से उद्धार से लेकर दस जासूसों के विद्रोह तक के इतिहास में कौन-कौन सी घटनाएँ उनका प्रतिनिधित्व करती हों। उस इतिहास के विद्रोहों के बारे में भी चुनने के लिए कुछ भिन्नताएँ मिलती हैं, परन्तु यह निश्चित है कि दसवीं परीक्षा ने मरुभूमि में चालीस वर्षों तक क्रमशः होती रही मृत्यु की अवधि की शुरुआत को चिह्नित किया, जब तक कि जवाबदेही की आयु वाले सारे विद्रोही मर नहीं गए।

उसी प्रकार, इन दस सिद्धान्तगत कसौटियों के मेरे चयन पर भी कुछ लोग आपत्ति कर सकते हैं, क्योंकि ऐसी भिन्नताएँ हो सकती हैं जो यहाँ मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ, उससे बेहतर प्रतीत हों। इसके बावजूद, दसवीं और अंतिम कसौटी उतनी ही स्पष्ट है जितना दस जासूसों का विद्रोह था। यह लैव्यव्यवस्था छब्बीस के 'सात गुना' का अस्वीकार था। इस पहचान को पुष्ट करने के लिए कई भविष्यवाणी-संबंधी प्रमाण हैं।

अगले लेख में हम उन भविष्यवाणी संबंधी साक्ष्यों की पहचान करना शुरू करेंगे जो इस पहचान को पुष्ट करते हैं कि लैव्यव्यवस्था 26 के सात समय लाओदीकियाई एडवेंटवाद की दसवीं और अंतिम विफलता है।

"जब परमेश्वर की सामर्थ यह गवाही देती है कि क्या सत्य है, तब वह सत्य सदैव सत्य के रूप में कायम रहना चाहिए। परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रकाश के विपरीत कोई भी बाद की धारणाएँ विचार में नहीं लाई जानी चाहिए। लोग पवित्रशास्त्र की ऐसी व्याख्याओं के साथ उठेंगे जो उनके लिए सत्य होंगी, परंतु जो सत्य नहीं हैं। इस समय के लिए जो सत्य है, परमेश्वर ने उसे हमारे विश्वास की नींव के रूप में हमें दिया है। उन्होंने स्वयं हमें सिखाया है कि क्या सत्य है। कोई एक उठेगा, फिर दूसरा भी, ऐसे नए प्रकाश के साथ जो उस प्रकाश का विरोध करता है जो परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा के प्रदर्शन के अधीन दिया है।"

कुछ लोग अब भी जीवित हैं, जो इस सत्य की स्थापना के दौरान हुए अनुभवों से होकर गुजर चुके हैं। परमेश्वर ने कृपा करके उनके प्राणों को इसीलिए बचाए रखा है कि वे अपने जीवन के अंत तक, जैसे प्रेरित यूहन्ना ने अपने जीवन के बिलकुल अंत तक किया, उस अनुभव को बार-बार दोहराते रहें जिससे वे गुजरे थे। और जो ध्वजधारक मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, वे अपनी रचनाओं के पुनर्मुद्रण के माध्यम से बोलेंगे। मुझे यह निर्देश मिला है कि उनकी आवाज़ें इसी प्रकार सुनी जाएँ। उन्हें इस बात की गवाही देनी है कि इस समय के लिए सत्य क्या है।

"हमें उन व्यक्तियों के शब्द ग्रहण नहीं करने चाहिए जो हमारे विश्वास के विशेष बिंदुओं का विरोध करने वाला संदेश लेकर आते हैं। वे शास्त्र के अनेक वचनों को इकट्ठा करते हैं और अपने दावा किए हुए सिद्धांतों के चारों ओर उन्हें प्रमाण के रूप में जमा कर देते हैं। पिछले पचास वर्षों में यह बार-बार किया गया है। और यद्यपि शास्त्र परमेश्वर का वचन है, और उसका आदर किया जाना चाहिए, तथापि उसका ऐसा अनुप्रयोग, जो परमेश्वर द्वारा इन पचास वर्षों से संभाली गई नींव से एक भी स्तंभ को हिला दे, एक बड़ी भूल है। जो कोई ऐसा अनुप्रयोग करता है, वह पवित्र आत्मा के उस अद्भुत प्रगटीकरण को नहीं जानता जिसने परमेश्वर की प्रजा के पास आए पिछले संदेशों को शक्ति और बल दिया।" चुने हुए संदेश, पुस्तक 1, 161.